Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-15, Issue-1, June-2021
www.researchguru.net

मीडिया तथा अनुवाद : परस्पर बदलते परिप्रेक्ष्य

डॉ. शीतल ऐ. अग्रवाल
आर्टस कोलेज, पाटण

मीडिया तथा अनुवाद का आपसी प्रकृति संबध हे जैसे कि अनुवाद प्रकृति के विभिन्न स्वरुपों में जिन विचारों तथा भावनाओं को संप्रेषित करता है उसी तरह मीडिया के माध्यम से जब ये भाषायी अनुवाद का रुप संगीत तथा चित्रो के साथ निर्धारित करती है। तो यह अत्याधुनिक रुप में ज्यादा प्रभावशाली हो जाती है।

अनुवाद का एक नया जादू सूचना तंत्र के प्रचार-प्रसार तथा प्रसारण माध्यमों, रेडियो, टी.वी. तथा सीनेमा इत्यादि से हमारे सामने आया है जहाँ पर अनुवाद की नयी भाषा भी सृजित हुई है मीडिया तथा अनुवाद की प्रकृति के बारे में पहले अनुवाद की प्रकृति समझना जरुरी है इसी के आधार पर अनुवाद की बुनियाद का ढाँचा खडा रहता है।

अनुवाद की इस प्रकृति के कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि भिन्न-२ भाषा समुदायियों को समझने में तो अनुवाद सहायक होता ही है विज्ञान के क्षेत्र में भी इसका पर्याप्त और निश्चित महत्त्व है विकसित देशों में जो भी वैज्ञानिक आविष्कार या अनुसंधान होते है, आयुर्विज्ञान से सबंधित जो भी शोध-कार्य है, वे अनुवाद की सहायता से विकासशील देशों को भी तत्काल सुलभ हो जाते है देश-विदेश के महत्त्वपूर्ण समाचार जानने के लिये अब महिनो प्रतीक्षा नही करनी पडती। मौलिक लेखन के समान ही अनुवाद का अपना महत्त्व है।[१]

अनुवाद और मीडिया की इस प्रकृति को हम विषय के आधार से लेकर शब्दानुवाद, छायानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद तथा व्याख्यानुवाद से चलभर रुपांतरण के स्वरुप में यह शैली शब्दानुवाद स्वरुप में दिखाई न देकर छायानुवाद हो जाती है।

भाषागत विशेषताओं का अनुवाद महत्व है। भाषा को कई प्रकार से परिभाषित किया गया है भाषा का अर्थ है, वह माध्यम जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों और विचारों को व्यक्त करता है। अतः भाषा विचार विनिमय का साधन है।[२]

अनुवाद तथा मीडिया के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद प्रकृति के बारे में एकमत होना मुश्किल है, फिर भी अनुवाद की प्रकृति तथा क्षेत्र के बारे में राय करते हुए डॉ. मंजुला दास का मत है कि मूलतः अनुवाद को दो सदर्भो द्वारा परिभाषित किया जा सकता है विस्तृत संदर्भ और सीमित संदर्भ। विस्तृत संदर्भ के अन्तर्गत किसी भी कथ्य के प्रतीकांतरण को अनुवाद की संज्ञा दी जा सकती है प्रतीक व्यवस्था के अर्न्तगत संकेतित वस्तु, संकेतार्थ तथा संकेतन प्रतीक को भली भांति समझने में अनुवाद-कर्म की जटिलता स्वयं ही सुलझ जाती है। फिर भी प्रायः भाषाओं में एक प्रतीक के लिये एक निश्चित अर्थव्यवस्था होती है।[३]

मीडिया तथा अनुवाद की इस प्रकृति संदर्भ में अनुवाद को वैज्ञानिक पक्ष के अंतर्गत लाते हुए यह कहा जाता है कि विचारों की अभिव्यक्ति के लिये जिन वचन एवं स्पष्ट ध्वनि संकेतो का व्यवहार किया जाता है उन्हें भाषा का रुप कहा जाता है, अर्थात् उसे ही भाषा कहा जायेगा, डॉ. भोलानाथ तिवारी ने कहा है कि एक भाषा में व्यक्त विचार को यथासंभव सम्मान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा ही दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।

अनुवाद की इस प्रकृति में मीडिया द्वारा जो अंतरप्रतीकात्मक नये प्रयोग किये गये है वे कहीं न कहीं रुपांतरण की स्थिति भी पैदा करते है क्योंकि आज मीडिया द्वारा बहुत कुछ संप्रेषित अनुवाद द्वारा किया जाता है। यह उसकी अभिनय क्षमता न निर्भर करता है वह जिस भाषा में विषय को प्रस्तुत कर रहा है, उसमें उसका कितना योगदान रहता है।

मीडिया तथा अनुवाद के किस प्रयोजन में गंभीर प्रयोगशीलता दिखाई देती है क्योंकि मीडिया तथा अनुवाद का यह रिश्ता बिल्कुल भिन्न तथा अलग है, जिसका पहले शायद इतना प्रयोग तथा विभिन्न आयामों वाला प्रयोग सामने नहीं आता फिर भी यह माना जा सकता है कि इस स्वरुप के जरिये अनुवाद प्रकृति का अंतरभाषिक अनुवाद प्रयोजन तथा अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद प्रयोजन अलग-२ अनुवाद प्रकृति के नये क्षेत्र ढूंढता हे।

"अनुवाद" को शिक्षा मानने वालों के अनुसार अभ्यास पर्याप्त प्रशिक्षण अनुप्रयोग की दक्षता आदि के माध्यम से अनुवाद को एक ललित कला तो नहीं है। उपयोगी कला के रुप में अवश्य परिभाषित किया जा सकता है, इससे निश्चय ही दो विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का मूल होता है की "दिनकर के अनुसार अनुवादों से दो परिणाम निकलते है पहला तो यह है कि अनेक देशों की कविताओं को अलग बगल रखकर देखने से काव्य रसिको की रुचि परिमार्जित होती है वे पिछडी रुचि को छोड़कर अपने भीतर नवीन कवियों का विकास करते है और दूसरा यह कि अनुवाद के समय अनुवादक कवि को अपनी भाषा की शक्ति और संभावनाओं की खोज का अवसर मिलता है।[४]

मीडिया तथा अनुवाद की प्रकृति प्रकरण की संभावनाओ पर विचार करते हुए आधुनिक अनुवाद संप्रेषण में असीम संभावनाएँ अनुवाद तथा संचार माध्यमो के परस्पर आदान-प्रदान भाषायी एवं दृश्य शिल्प द्वारा देखी जा सकती है।

यह अनुवाद प्रकृति का ऐसा पक्ष भी दिखाता है, जिसको हम भाषायी अनुवाद भी वैज्ञानिक पक्षीय धारा के अध्ययन बोध से भी देख सकते है, कुछ विद्वानो का मत है कि यह स्पष्ट है कि किसी भाषा में प्रयुक्त शब्द भावों, विचारों वस्तुओ आदि के प्रतीक होते है प्रत्येक भाषा की अपनी प्रकृति-प्रवृत्ति और व्यवस्था होती है जिसका अध्ययन अनुवाद विज्ञान में अत्यावश्यक है अनुवाद सामान्यतः दो भाषाओं पर आधारित होता है भाषा विज्ञान के अंतर्गत ध्वनि, शब्द रुप वाक्य अर्थ लिपि इत्यादि का अध्ययन किया जाता है अनुवाद के लिए उक्त सभी भाषा विज्ञान के अंग महत्त्वपूर्ण होते है।[५]

इसी तरह भाषा के वैज्ञानिक तत्वो पर विवेचन करते हुए हम पाते हैं कि भाषायी स्तर पर यह कई भेंदो में बटी हुई है इसमें

विकास के औपचारिक प्रतीकात्मक शब्द मिलेंगे द्वारा अनुवाद की भाषा अपने लक्ष्य भाषा के प्रारुप तक पहुँचते एक नई अर्जित की गई तथा आंचलिक भाषा के स्वरुप में दिखाई देने लगती है।

अनुवाद के स्तर पर इस भाषा का परंपरागत स्वरुप कैसे बदलता है इस बारे में कुछ विशेषज्ञों का मत यह उल्लेखनीय है कि भाषा का पारस्परिक व्यवहार अर्थात भावो और विचारों के विनिमय का साधन है। अंतएवं किसी भाषा के बोलने वाले सदा इस बात का ध्यान रखते है कि जहाँ तक संभव हो भाषा में नवीनता न आने पाए। भाषा के पारंपरिक होने और उसकी धारा के अविच्छित रहने का यह अर्थ न समझना चाहिए कि भाषा कोई पैतृक और कुल क्रमागत दाय है।[६]

वैज्ञानिक प्रकृति संभावनाएँ ध्वनि के द्वारा भी देखी जा सकती है जैसे की कहा जाता है कि किसी भी अनुवाद में भूमि का स्थान तथा भूमि का विशेषतौर पर निर्धारित की गई है अनुवाद एवं ध्वनि के संबंधो को इसलिए भी विशेष तौर दर्ज किया है कि ध्वनि ही संचार माध्यमों के इस अनुवाद संदर्भ को एक नया स्वरुप प्रदान करती है। आज आधुनिक समय में अनेक तरह के प्रयोग हर क्षेत्र में जब सामने आ रहे है तो अनुवाद तथा मीडिया के स्तर पर भी इन प्रयोगों को इसी परिप्रेक्ष्य में अपनाना पडेगा।

❖ परस्पर बदलते परिप्रेक्ष्य :

उपर्युक्त चर्चा के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मीडिया तथा अनुवाद के परस्पर बदलते परिप्रेक्ष्य आज उस वर्तमान की रुपरेखा निर्धारित कर रहे जो आने वाले दिनो में और भी चमत्कारिक हो सकता है इस बदलते हुए परिवेश में यह पूरा विश्व इंटरनेट के एक छोटे से पर्दे में भाषाओं की तमाम सीमाओ को तोडकर पूरे विश्व के संदर्भ में सूचनाओं का आदान-प्रदान कर रहा है।

मीडिया और अनुवाद के बदलते परिप्रेक्ष्य में हम संचार माध्यमों के बदलते हुए विभिन्न स्वरुपों को उस परिवेश में भी देख सकते है जिनके द्वारा हम भाषायी घेरे को तोडकर काल, देश, भाषा का अनुवाद, देशीपात्र लिबास, आचार-व्यवहार तथा भाषा के रुपांतरीत रुप की आंचलिकता के विशेष संदर्भ में देख सकते है।

मीडिया तथा भाषा के अनुवाद संबंधो को हम भाषा के स्तर पर दृश्यात्मक संजोग से उत्पन्न भाषायी उडान को चिहिन्त करते है भाषा एक सामाजिक और सांकेतिक संस्था है वह हमें पूर्वजो की परंपरा से प्राप्त हुई है उसे हममे से प्रत्येक व्यक्ति अर्जित करता है, पर वह किसी की कृति नहीं है। इस भाषा को समझने के लिए केवल संबंध ज्ञान आवश्यक होता है, अर्थात् वक्ता या श्रोता को केवल यह जानने का यत्न करना पडता है कि अमुक शब्द का अमुक अर्थ से संबंध अथवा संसर्ग है भाषा, संबंध और संसर्गो के रुप में एक व्यक्ति के सामने आती है।[७]

इस तरह भाषा अनुवाद का एक जरिया बनती है इस परस्पर

बदलते परिप्रेक्ष्य में बदलते संदर्भगत स्वरुप में मीडिया तथा अनुवाद की अनेक संभावनाएँ दिखाई देती है इस परस्पर बदलते परिप्रेक्ष्य में मीडिया तथा अनुवाद के तत्वों की गहरी छानबीन के आधार पर हम यह कह सकते है कि अनुवाद की भाषा अपने लक्ष्य भाषा तक पहुँचती विभिन्न प्रयोग शिल्प के प्रयोग तथा अभिनय से नये सरोकारो का तलाश करती है।

आज मीडिया की विशेषकर टेलीविजन एवं फिल्म की भाषा को पूर्णतः समझने के लिए फिल्मों का गहन अध्ययन किया जाना चाहिए। फिल्म, मौलिक रुप से प्रतिबिम्बो एवं संकेतो की भाषा है एवं इसका व्याकरण मौखिक-भाषा के ही समान है। परंतु इसका अपना ही व्याकरण एवं वाक्य-विज्ञान होता है जिसमें फिल्म तकनीक के मूल तत्व अंतर्निहित होते है।

मीडिया तथा अनुवाद के इन परस्पर बढते हुए रिश्तों तथा इसके तत्वों पर बदलते हुए परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में यह कहना भी उस दृश्यात्मक भाषा को गति देना ही है। जो इस बदलते हुए परिवेश में आपसी संबंधो का एक नया संयोजन करती है।

उपर्युक्त संदर्भो के आधार पर हम मीडिया तथा अनुवाद की असीम संभावनाएँ तथा इसके परस्पर बदलते परिप्रेक्ष्य में यह कह सकते है कि यह भाषा के विकास का ही एक नमूना है।

सांकेतिक भाषा के उपर्युक्त संदर्भ को हम इस तरह भी देख सकते है कि आदिकाल के मनुष्यों के हस्तादि के साधारण संकेतो से काम चलता न देखा तो उन्होने कुछ ध्वनि संकेतो को जन्म दिया है। वे ही ध्वनि संकेत विकसित होते-होते आज इस रुप में दिखाई पडते है। इस मत में तथ्य इतना ही है कि शब्द और अर्थ का संबंध लोकेच्छा का शासन मानता है और शब्दमय भाषा का उद्भव मनुष्यों की उत्पत्ति के कुछ समय उपरांत होता है यह कल्पना करना कि मनुष्यों के बिना भाषा ज्ञान के ही इकठ्ठे होना अपनी व्यवस्था पर विचार किया और कुछ संकेत स्थिर किये।[८]

भाषा की उपर्युक्त संदर्भ में व्याख्या यह बताती है कि भाषा की सांकेतिक उत्पत्ति ही मानव व्यवहार के लिए कहीं न कहीं उसके द्वारा बोली व लक्षित की गई भाषा का ध्यान ही करती है।

मीडिया तथा अनुवाद के इन बदलते हुऐ परिप्रेक्ष्य की इस यात्रा में हम देख सकते है कि आज मीडिया अनुवाद को नये हाशिये पर केन्द्रित करके एक नये स्वरुप को जन्म दे रहा है जो निश्चय ही आने वाले वर्षो में एक भाषायी अनुवाद में नया स्वरुप परिभाषित किया जा सकेगा।

: संदर्भ :

१. डॉ. मुंजुला दास, अनुवाद सिद्धान्त और व्यवहार, पृ. १७

२. डॉ. सर्राफ एवं गोस्वामी, अनुवाद सिद्धान्त एवं स्वरुप, पृ. २०

३. वही, पृ. १८

४. रामधारी सिंह दिनकर, सीपी और शंख भूमिका, पृ. ९

५. डॉ. सर्राफ एवं गोस्वामी, अनुवाद सिद्धान्त एवं स्वरुप, पृ. २०

६. डॉ. श्याम सुंदर दास, भाषा विज्ञान, पृ. २२

७. वही, पृ. २३

८. वही, पृ. २४